Dr M. K. Jha.
Dept of Sociology
V.S.J College. Rajnagar

B A part - III
Sociology (H)
paper - VII
Social problems in India

Question- बेकारी की परिभाषा दीजिए तथा इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

Answer- आज विश्व के विकासशील, विकसित एवं पिछड़े हुए देशों बेकारी एक अभिशाप बना हुआ है आज कोरोना वायरस पूरी दुनिया गंभीर बेकारी को जन्म दिया है आज कोविड 19 आर्थिक मंदी, बेकारी तथा गरीबी को चरम पर पहुंचा दिया है। आज बेकारी व्यक्तियों में निराशा, दीनता और विघटन को पुनः जन्म दिया है।

समाजशास्त्र के शब्दकोश में कहा गया है "बेकारी का तात्पर्य एक सामान्य कार्यशील वर्ग को एक सामान्य अवधि में सामान्य परिस्थितियों में किसी आर्थिक कार्य से अनैच्छिक रूप से वंचित कर देना है।" आज लाखों व्यक्ति बेकारी की स्थिति में है जो आवश्यक योग्यता, कार्य करने की इच्छा और प्रयत्नों के पश्चात भी अपनी अपने आश्रितों की अनिवार्य आवश्यकताओं को दूर करने के अवसर प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

बेकारी उस दशा को कहते हैं जिसमें कार्य करने योग्य व्यक्तियों को करने की इच्छा होते हुए भी कार्य नहीं मिलती है। Karl pribram के अनुसार बेकारी श्रम बाजार की वह दशा है जिसमें श्रम शक्ति की पूर्ति काम करने के स्थानों की संख्या से अधिक होती है। P. Florence Sarget के अनुसार "Unemployment has been defined as the idleness of persons able and willing to work." कार्य करने के योग्य एवं इच्छुक व्यक्ति को काम नहीं मिलने से निष्क्रियता का जन्म होता है।

एतदर्थ, बेकारी एक ऐसी दशा है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से काम करने के लिए समर्थता प्रस्तुत करते हैं जिनमें इच्छा, योग्यता, प्रयत्न और साहस भी रहता है लेकिन उन्हें जीविका के साधन से वंचित कर दिया जाता है या काम का अवसर नहीं दिया जाता है आज भारत में 8 करोड़ से ऊपर ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में बेकारी की संख्या है।

बेकारी के प्रकार:
(Types of unemployment.)

आधुनिक युग में बेकारी का अप्राकृतिक वृद्धि हुआ है। यद्यपि बेकारी को प्रातीतिक एवं वैज्ञानिक आधार पर सम्पादित है लेकिन नीचे बेकारी का प्रकार सामान्य आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है -

1. मौसमी तथा आकस्मिक बेकारी :-
भारत में कुछ उत्पादन एवं संस्थाएं ऐसी हैं जो ऋतु सम्बन्धी काम करते हैं तथा मौसम के बाद काम बन्द कर देते हैं वहाँ अर्द्ध बेकारी उत्पन्न होता है जैसे शक्कर, कपड़ा, तिलहन, बिस्कुट जैविक उद्योग आदि को मौसमी एवं आकस्मिक बेकारी में रखा गया है।

2. औद्योगिक बेकारी -
जब से मशीनीकरण एवं वैज्ञानिक आविष्कार वाले यंत्रों से काम का संचालन प्रारम्भ हुआ है तब से मानव शक्ति का घटना प्रारंभ हुआ। फलतः घरेलू उद्योग, लघु उद्योग, वृहत संगठित उद्योग में भी भीषण बेकारी, औद्योगिक बेकारी के कारण में आता है।

3. चक्रीय बेकारी - चक्रीय वह बेकारी है जो व्यापारिक संकट के कारण होती है। व्यापार में उतार चढ़ाव का उत्पादों की पूर्ति और माँग पर प्रभाव पड़ता है। इस पूर्ति और माँग के बीच के अनुसार श्रम की पूर्ति और माँग प्रभावित होती है जो व्यापारिक संकट और व्यापारिक विषय है। इससे उत्पन्न बेकारी को चक्रीय बेकारी है।

4. अस्थायी बेकारी - शिक्षा या प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, जब व्यक्ति को काम नहीं मिलता है तो वो बेकार कुछ समय के लिए हो जाते है वह अस्थायी बेकारी है और उन्हें काम का अवसर मिल जाता है।

5. अर्द्ध बेकारी - कभी डॉक्टर, मास्टर, एवं योग्यताधारी व्यक्ति का आंशिक रूप से जो रोजगार दिया जाता है वह अर्द्ध बेकारी के नाम से जाना जाता है।

6. ऐच्छिक बेकारी - जब व्यक्ति में काम करने की क्षमता रहता है लेकिन आलस्य, कम वेतन अवसाद एवं स्वेच्छा से काम नहीं करता है तो उसे ऐच्छिक बेकार माना गया है।

7. छुपी बेकारी - भारत कृषि प्रधान देश है। संयुक्त परिवार में भूमि की सीमितता और जनसंख्या की ~~क्र~~ अभिवृद्धि के कारण बेकारी उत्पन्न हुई है जो छुपी बेकारी कहलाता है।

8. खुली बेकारी - जब मजदूरों को नगर में काम नहीं मिलता, शिक्षित वर्ग अन्य कार्य को नहीं करना चाहते हैं इस प्रकार का बेकारी खुला बेकारी के नाम से जाना जाता है।

Scanned with Cam

3- संरचनात्मक बेकारी- जब देश में पूँजी के साधन सीमित होते हैं और काम चाहने वालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है तो कुछ व्यक्ति बिना काम के ही रह जाते हैं क्योंकि उनके लिए पर्याप्त पूँजी साधन नहीं होते हैं इसे संरचनात्मक बेकारी कहते हैं और यह विकासशील देशों में पाई जाती है तथा दीर्घकालीन होती है।

अन्त में कहा जा सकता है कि कुछ बेकारी अल्पकालीन होती है तो कुछ दीर्घकालिन।

Scanned with Cam